गरिमा 2

1. हमारी भाषा

संसार का प्रत्येक प्राणी चाहे वह मनुष्य हो या पशु अपनी बात या भाव को प्रकट करने के लिए किसी न किसी माध्यम का प्रयोग करता है। अपने भावों को प्रकट करने का माध्यम ही भाषा कहलाता है।

शिक्षण-संकेत

- शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को पाठ पृष्ठ 3 पर दिए चित्र को ध्यान से देखने के लिए कहें और उनसे पूछें कि इस चित्र में क्या हो रहा है।
- बच्चों को बोलने का अवसर दें। तदुपरांत उन्हें बताएँ कि इस चित्र में एक छोटे-से पिल्ले को चोट लग गई है और वह कूँ-कूँ की आवाज़ निकाल रहा है।
- बच्चों को पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम रखना तथा उनकी देखभाल करने की सीख दें।
- फिर समझाएँ, पिल्ले की कूँ-कूँ की आवाज़ बच्चों ने सुनी और उसकी चोट के बारे में दीदी को बोलकर बताया।
- बच्चों की रोचकता को बनाए रखने के लिए पूछें, क्या आपके घर में कोई पालतू पशु है? आप उसकी बात कैसे समझ पाते हैं? आदि।
- फिर बताएँ, इस तरह ये सभी बोलकर-सुनकर अपनी-अपनी बात बता रहे हैं।
- पृष्ठ 4 पर दिए चित्र के बारे में बच्चों से चर्चा करते हुए पूछें, इस चित्र में क्या हो रहा है।
- बच्चों के उत्तर देने के बाद उन्हें बताएँ, डॉक्टर ने दवा का नाम लिखा, दीदी ने उसे पढ़कर समझा।
- उन्हें समझाएँ, हम सभी इसी प्रकार बोलकर-सुनकर, लिखकर-पढ़कर ही अपनी बात दूसरों तक पहुँचाते हैं तथा उनकी बात समझते हैं। इसी को भाषा कहते हैं।
- बच्चों को भाषा की परिभाषा याद करवाएँ।
- भाषा के रूप के बारे में भी बताएँ।
- समझाएँ, बोलना-सुनना भाषा का मौखिक रूप कहलाता है। तथा लिखना-पढ़ना भाषा का लिखित रूप होता है। इनकी परिभाषा भी बच्चों को याद करवाएँ।
- प्रत्येक बच्चे पर अपना ध्यान बनाएँ रखें।
- 'आपने सीखा' के अंतर्गत दिए बिंदुओं द्वारा बच्चों को पाठ की दोहराई करवाएँ।
- अभ्यास करवाने में बच्चों की यथोचित सहायता करें।